©IJCIRAS | ISSN (O) - 2581-5334
October 2020 | Vol. 3 Issue. 5

श्रीमद्भगवद्गीता का माहात्म्य

Dr Ramanand Kumar Raman
B N M U, Madhepura

सारांश

भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन की सार्थकता जीवन को सुसंयत करके उसे भगवत् मुखी बनाने में है, जिससे इस क्षुद्र अल्पकालस्थायी ससीम भैतिक जीवन से उठकर महान्, शाश्वत एवं असीम, अनन्त जीवन को प्राप्त किया जा सके। श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात् भगवान की दिव्य वाणी है। इसकी महिंमा अपार है, अपरिमित है। शेष, महेश, गणेश भी इसकी महिमा को पूरी तरह से नहीं कह सकते य फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है।

गीता एक रहस्यमयी ग्रंथ है। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रह किया गया है। इसकी रचना इतनी सरल और सुन्दर है कि थोड़ा अभ्यास करने से भी मनुष्य इसको सहज हीं समझ सकता है, परन्तु इसका आशय इतना गुढ़ और गंभीर है कि आजीवन निरन्तर अभ्यास करते रहने पर भी उसका अन्त नहीं आता। प्रतिदिन नये-नये भाव उत्पन्न होते ही रहते हैं, इससे वह सदा नवीन ही बना रहता है। भगवान के गुण, प्रभाव, स्वरूप, तत्व, रहस्य और उपासना तथा कर्म एवं ज्ञान का वर्णन जिस प्रकार इस गीताशास्त्र में किया गया है वैसा अन्य ग्रंथों में एक साथ मिलना कठिन है। भगवद्गीता एक ऐसा अनुपमेय शास्त्र है जिसका एक भी शब्द सदूपदेश से खाली नहीं है।

गीता सर्वशास्त्रमयी है। गीता में सारे शास्त्रों का सार भरा हुआ है। इसे सारे शास्त्रों का खजाना कहें तो भी अत्युक्ति न होगी। महर्षि वेदव्यास ने कहा है -

'' गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रसंग्रहै ः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता।।''[१]

भगवद्गीता को गीतोपनिषद् भी कहा जाता है। यह वैदिक ज्ञान का सार है और वैदिक साहित्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपनिषद् है। भगवद्गीता का मर्म भगवद्गीता में ही व्यक्त है। इनके वक्ता साक्षात् महान् योगेश्वर भगवान् श्री कृष्ण हैं। आध्यात्मिक आकाश की तेजोमय किरणें (ब्रह्मज्योति) में असंख्य लोक तैर रहे हैं। यह ब्रह्मज्योति परम धाम कृष्णलोक से उद्भूत होती है और आनन्दमय तथा चिन्मय लोक, जो भौतिक नहीं हैं, इसी ज्योति में तैरते रहते हैं। भगवान् भी कृष्ण कहते हैं :-

'' न तद्भासते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निबर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।''[२]

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्येता आध्यात्मिक आकाश तक पहुँच जता है, उसे इस भौतिक आकाश में लौटने की आवश्यकता नहीं रह जाती। भौतिक आकाश में यदि हम सर्वोच्च लोक (ब्रह्मलोक) को भी प्राप्त कर लें य चन्द्र लोक का तो कहना ही क्या, तो वहाँ भी वही जीवन की परिस्थितियाँ-जन्म,मृत्यु,व्याधि तथा जरा-होंगी। भौतिक ब्रह्माण्ड का कोई भी लोक संसार के इन चार नियमों से मुक्त नहीं है।

गीता गंगा से भी बढ़कर है। शास्त्रों में गंगा स्नान का फल मुक्ति बतलाया है। परन्तु गंगा में स्नान करने वाला स्वयं मुक्त हो सकता है। वह दूसरों को तारने की सामर्थ्य नहीं रखता। किन्तु गीतारूपी गंगा में गोते लगाने वाला स्वयं तो मुक्त होता हीं है, वह दूसरों को भी तारने में समर्थ हो जाता है। गंगा तो भगवान् के चरणो ंसे उत्पन्न हुई है और गीता साक्षात् भगवान् नारायण के मुखारविन्द से निकली है।
फिर गंगा तो जो उसमें आकर स्नान करता है उसी को मुक्त करती है, परन्तु गीता तो घर-घर में जाकर उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखलाती है।

गीता गायत्री से भी बढ़कर है। गायत्री जप से मनुष्य की मुक्ति होती हैं, यह बात ठीक है य किन्तु गायत्री-जप करने वाला भी स्वयं ही मुक्त होता है, पर गीता का अभ्यास करनेवाला तो तरन-तारन बन जाता है। जब मुक्तिदाता स्वयं भगवान् हीं उसके हो जाते हैं, तब मुक्ति की तो बात ही क्या है। मुक्ति उसकी चरण धूलि में निवास करती है। मुक्ति का तो वह सत्र ही खोल देता है। गीता को हम स्वयं भगवान् से भी बढ़कर कहें, तो कोइ अत्युक्ति नहीं होगी। भगवान् ने स्वयं कहा है-

" गीताश्रयेऽहं तिष्ठामि गीता में चोत्तमं गृहम्।

गीताज्ञानमुपाश्रित्य त्रील्लोकान् पालयाम्यहम्।।"[३]

" मैं गीता के आश्रय में रहता हूँ, गीता मेरा श्रेष्ठ घर है। गीता के ज्ञान का सहारा लेकर ही मैं तीनों लोकों का पालन करता हूँ।"

इसके सिवाय, गीता में ही भगवान मुक्तकण्ठ से यह घोषणा करते हैं कि जो कोई मेरी इस गीतारूपी आज्ञा का पालन करेगा वह निःसन्देह मुक्त हो जाएगा य-

" ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवा :।

श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।।"[४]

इतना ही नहीं भगवान् कहते हैं कि जो कोई इसका अध्ययन भी करेगा उसके द्वारा मैं ज्ञानयज्ञ से पूजित होऊगाँ-

" अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयो :।

ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्ठः स्यामिति मे मतिः।।"[५]

जब गीता के अध्ययनमात्र का इतना माहात्म्य हैं, तब जो मनुष्य इसके उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बना लेता है और इसका रहस्य भक्तों को धारण कराता है और उनमें इसका विस्तार एवं प्रचार करता है उसकी तो बात ही क्या है। उसके लिए तो भगवान् कहते हैं कि वह मुझको अतिशय प्रिय है। वह भगवान् को प्राणों से भी बढ़कर प्यारा है। यह भी कहा जाए तो कुछ अनुचित नहीं होगा- भगवान् अपने ऐसे भक्तों के अधीन बन जाते हैं।

गीता भगवान का श्वास है, हृदय है और भगवान् की वाङ्मयी मूर्ति है। जिसके हृदय में, वाणी में, शरीर में तथा समस्त इन्द्रियों एवं उनकी क्रियाओं में गीता रस गयी है वह पुरूष साक्षात् गीता की प्रतिमूर्ति है।

उसके दर्शन, स्पर्श, भाषण एवं चिन्तन से भी दूसरे मनुष्य परम, पवित्र बन जाते हैं। फिर उसके आज्ञा पालन एवं अनुकरण करने वालों की तो बात ही क्या है। वास्तव में गीता के समान संसार में यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, व्रत, संयम और उपवास आदि कुछ भी नहीं हैं।

गीता ज्ञान का अथाह समुद्र है, इसके अन्दर ज्ञान का अनन्त भंडार भरा पड़ा है। इसका तत्त्व समझाने में बड़े-बड़े दिग्विजयी विद्वान और तत्वालोचक महात्माओं की वाणी भी कुण्ठित हो जाती हैय क्योंकि इसका पूर्ण रहस्य भगवान् श्रीकृष्ण ही जानते हैं। उनके बाद कहीं इसके संकलनकर्त्ता महर्षि वेदव्यास जी और श्रोता महान् धनुर्धर अर्जुन का नम्बर आता है।

गीता अनन्तभावों का अथाह समुद्र है। रत्नाकर में गहरा गोता लगाने पर जैसे रत्नों की प्राप्ति होती है, वैसे ही इस गीतासागर में गहरी डुबकी लगाने से जिज्ञासुओं को नित्य-नुतन विलक्षण भाव-रत्न-राशि की उपलब्धि होती है।

श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं -

‘‘ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।“६

यहाँ भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को फलासक्त रहित होकर कर्म (स्वधर्म) के रूप में युद्ध करने की आज्ञा देते हैं। आसक्ति चाहे स्वीकारात्मक हो या निषेधात्मक, वह बन्धन का कारण है। अकर्म पाप है। भक्तों के लिए श्री भगवान् परम हैं और निर्विशेषवादियों के लिए मुक्ति परम है। अतः जो व्यक्ति समुचित पथप्रदर्शन पाकर और कर्म फल से अनासक्त होकर कृष्णभावनामृत में कार्य करता है, वह निश्चित रूप से जीवन-लक्ष्य की ओर प्रगति करता है-

” तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरूषः।।“७

यह गीतोपनिषद्, भगवद्गीता, जो समस्त उपनिषदों का सार है, और गाय के तुल्य है और ग्वालबाल के रूप में विख्यात भगवान् श्री कृष्ण इस गाय को दुह रहें हैं। अर्जुन बछड़े के समान है, और सारे विद्वान तथा शुद्ध भक्त भगवद् गीता के अमृतमय दूध का पान करने वाले हैं।

” सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।“८

आज के युग में लोग एक शास्त्र, एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक वृत्ति के लिए अत्यन्त उत्सुक है। अतएव

‘‘ एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतम्।

एको देवो देबकीपुत्र एव।

एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि।

कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।“ ९

References

१. महा० भीष्म० ४३. १
२. श्रीमद्भगवद् गीता १५. ६
३. वाराहपुराण
४. श्रीमद्भगवद् गीता ३. ३१
५. गीता माहात्म्य – ६